पाठ–25

चमत्कार

–जाकिर अली 'रजनीश'

प्रस्तुत एकांकी में, समाज के कुछ चालाक किस्म के लोगों द्वारा मामूली–सी बीमारी को जादू–टोने या मंत्रशक्ति से दूर करने की बात बताकर लोगों को भ्रमित करने के कुप्रयासों का पर्दाफाश किया गया है। वैज्ञानिकता की कसौटी पर ऐसे चमत्कारों को कसकर हमें भी समाज में फैले अंधविश्वासों को दूर करने का प्रयास करना चाहिए।

इस पाठ में हम सीखेंगे– अभिनय करना और अनुतान, बलाघात के साथ बोलना, विभक्ति चिह्न का प्रयोग, मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग।

पात्र–परिचय

राहुल	–	कॉलेज का एक विद्यार्थी, आयु लगभग 18 वर्ष।
रोशन	–	राहुल का मित्र, विज्ञान का विद्यार्थी।
स्वामी	–	साधु की वेशभूषा में एक कपटी व्यक्ति, आयु लगभग 45 वर्ष।
जतिन	–	6 वर्ष का एक छोटा बालक।
माँ	–	जतिन की माँ, आयु लगभग 35 वर्ष।
इंस्पेक्टर	–	पुलिस अधिकारी, आयु लगभग 30 वर्ष ।
सिपाही	–	पुलिस कर्मचारी, आयु लगभग 35 वर्ष।

(परदा खुलता है। मंच पर स्वामी जी अपना थैला तथा कुछ टीम–टाम लिए बैठे हैं। वे अपना चमत्कार दिखाने की तैयारी में हैं। परदा खुलते ही दर्शकों में खुसुर–फुसुर होने लगती है।)

स्वामी : भाइयो! अब आप लोग शान्त हो जाइए। अभी आप लोगों के सामने मैं अपनी मंत्र–शक्ति का प्रदर्शन करूँगा। लेकिन सबसे पहले एक बार जोर–से तालियाँ बजाइए। (सभी लोग तालियाँ बजाते हैं। तभी रोते हुए जतिन को लेकर उसकी माँ मंच पर आती है।)

शिक्षण–संकेत– बनावटी साधुओं और ठगों के संबंध में कक्षा में चर्चा करें। विद्यार्थियों को बताएँ कि समाचार–पत्रों में ऐसे लोगों के द्वारा ठगी करने की घटनाएँ आम तौर पर प्रकाशित होती रहती हैं। ऐसे समाचारों को संकलित करवाएँ। तीन–चार विद्यार्थियों को अलग–अलग पात्र बनाकर उनसे कक्षा में अभिनय कराते हुए पाठ पढ़ाएँ। विद्यार्थियों के कथोपकथन पर विशेष ध्यान रखें।

माँ : (हाथ जोड़कर स्वामी जी से) स्वामी जी, मेरे बच्चे के पेट में बहुत दर्द है। कृपया इसका उपचार कर दीजिए।

स्वामी : अरे बहिन जी! यह आप क्या कराने आ गईं। मैं तो अपना चमत्कार दिखाने आया था। चलो, इसी बालक पर अपना चमत्कार दिखाऊँगा। बोलो बहिन जी! इसे क्या कष्ट है।

माँ : स्वामी जी, इसके पेट में अक्सर भयंकर दर्द उठता है।

(स्वामी जी जतिन की कमीज उठाकर उसका पेट देखते हैं।)

स्वामी : (गंभीर मुद्रा में) ओह, अनर्थ! इसके पेट में तो पथरी है।

माँ : (घबराकर) यह आप क्या कह रहे हैं, स्वामी जी?

स्वामी : मैं ठीक कह रहा हूँ। लेकिन घबराओ नहीं। मैं अभी अपनी मंत्र–शक्ति से इसकी पथरी निकाल देता हूँ। आओ बेटे, तुम यहाँ पर लेट जाओ।

(स्वामी जी जतिन को एक ऊँची जगह पर लिटा देते हैं और उसकी कमीज पर एक बोतल से पानी जैसा कुछ छिड़कते हैं। इसी समय मौका देखकर राहुल व रोशन चुपके से स्वामी जी के पास में रखा सामान बदल देते हैं। जतिन लगातार रोता रहता है।)

स्वामी : मत रो बेटे! मैं अभी तेरा दर्द दूर कर देता हूँ।

(एक पुड़िया से कोई पाउडर जतिन को खाने को देते हैं। उसे खाने के बाद जतिन चुप हो जाता है। स्वामी जी आहिस्ता–आहिस्ता जतिन के पेट पर हाथ फेरते हैं। अचानक जतिन के पेट से खून बहने लगता है।)

माँ : (बेटे के पेट से खून बहता देखकर) स्वामी जी, यह खून कैसे बहने लगा?

स्वामी : (प्रसन्न होकर) घबराओ नहीं, मेरा प्रयास सफल हो गया। ये रहीं इसके पेट की पथरियाँ! (हाथ फैलाकर दो छोटी कंकरियाँ दिखाते हैं।) इन्हें मैंने अपनी मंत्र–शक्ति से बाहर निकाला है।

माँ : लेकिन इसका खून ?

स्वामी : घबराओ नहीं, सब ठीक हो जाएगा। (लड़के का पेट पोंछते हैं।) (दर्शकों से) भाइयो! आप में से कोई एक–दो दर्शक आकर देख सकते हैं। इसके पेट पर कोई घाव नहीं है।

(मंच पर दर्शक आते हैं और जतिन का पेट देखते हैं।)

दर्शक : (आश्चर्य भाव से) भाइयो! सच में जतिन के पेट पर कोई घाव नहीं है।

(दर्शक वापस लौट जाते हैं।)

स्वामी : (अपनी बात आगे बढ़ाते हुए) देखा, कोई घाव नहीं। यह सब मेरे मंत्रों का कमाल है। (भीड़ स्वामी जी की जय–जयकार करती है।)

स्वामी : (हाथ ऊपर उठाकर) ठीक है, ठीक है। आप लोग शांत हो जाएँ अब मैं आप लोगों को एक और जादू दिखाऊँगा। (अपने थैले में से एक नारियल निकालकर सबको दिखाते हुए)

स्वामी : यह है मेरी बीस साल की तपस्या का अद्‌भुत नमूना। अभी आप लोगों के सामने इसे तोड़ूँगा तो इसमें से फूल बरसेंगे। (नारियल जमीन पर पटक देते हैं। पर उसमें से कुछ भी नहीं निकलता।)

(राहुल का मंच पर आना)

राहुल : (मुस्कराकर) यह क्या स्वामी जी महाराज!, नारियल तो खाली है ! इसमें से तो कुछ भी नहीं निकला, जबकि यह चमत्कार तो मेरा दोस्त रोशन कर सकता है।

स्वामी : (खिसियाते हुए) क्या बक रहे हो ?

(रोशन का प्रवेश)

रोशन : यह बक नहीं रहा, ठीक कह रहा है। मैं अभी यह चमत्कार करके दिखाता हूँ। (अपने थैले में से नारियल निकालकर उसे जमीन पर पटकता है। उसमें से ढेर सारे मोंगरे के फूल निकलते हैं।

रोशन : देखा यह आश्चर्य आपने! (लोग तालियाँ बजाते हैं।)

राहुल (स्वामी से): देखा आपने मेरे दोस्त का चमत्कार !

स्वामी : (रोष में) यह छोकरा मेरी बराबरी नहीं कर सकता। मैं अपनी मंत्र–शक्ति से आग जला सकता हूँ। मेरी मंत्र–शक्ति देखो। (स्वामी अपने थैले से लाल कागज निकालकर उसके टुकड़े करता है। फिर एक शीशी दिखाते हुए कहता है।) अब मैं कागज़ के इन टुकड़ों पर यह अभिमंत्रित जल डालूँगा और

ये कागज जल उठेंगे। (स्वामी कागज पर शीशी का पदार्थ डालता है, पर आग नहीं जलती।)

राहुल : लगता है, आपका यह मंत्र भी बेकार हो गया, स्वामी जी ! लेकिन लोगों को निराश नहीं होना पड़ेगा, क्योंकि मेरा दोस्त यह चमत्कार भी दिखा सकता है।

रोशन : (कागज फाड़ते हुए) ये रहे कागज के टुकड़े और यह मैंने डाला इन पर अभिमंत्रित जल और यह आग जल उठी।

(आग जलने पर सभी लोग जोर–से तालियाँ बजाते हैं, जब कि स्वामी जी क्रोध में अजीब तरह से मुँह बनाते हैं। तभी मंच पर इंस्पेक्टर व सिपाही आते हैं।)

इंस्पेक्टर : सिपाही, इस ढोंगी को गिरफ्तार कर लो। अब इसकी पोल खुल चुकी है।

(सिपाही आगे बढ़कर स्वामी को पकड़ लेता है।)

स्वामी : (क्रोध में) यह आप क्या कर रहे हैं ? मैं सिद्ध योगी हूँ, सबको भस्म कर दूँगा।

राहुल : अच्छा, तब आप वह मंत्र भी आजमाकर देख लीजिए, शायद काम बन जाए।

इंस्पेक्टर : (स्वामी की नकली दाढ़ी नोंचते हुए) मुझे इसकी बहुत दिनों से तलाश थी। मैं तुम्हारा आभारी हूँ रोशन, जो तुमने इसकी पोल खोलकर इसे पकड़वाया। लेकिन एक बात मेरी समझ में नहीं आई कि ये चमत्कार होते कैसे हैं?

रोशन : सबसे पहले मैं पथरी का चमत्कार बताता हूँ। दरअसल बात यह है कि इस स्वामी ने सबसे पहले लड़के के पेट पर चूने का पानी मला, फिर हाथ में हल्दी का चूर्ण एवं कंकरी छिपाकर पेट पर हाथ फेरने लगा। चूने के पानी से हल्दी ने रासायनिक क्रिया करके लाल रंग बना दिया, जिसे सब लोगों ने खून समझ लिया और फिर हाथ में छिपी कंकरी को पथरी बता दिया।

इंस्पेक्टर : लेकिन यह लड़का चुप कैसे हो गया था ?

रोशन : भभूत में मिली मीठी सेकरीन के कारण। जैसे ही इसे मीठा–मीठा लगा, इसने रोना बंद कर दिया।

माँ : हाँ बेटा, तुम ठीक कहते हो। जब भी यह कोई मीठी चीज खा जाता है, रोना बंद कर देता है। लेकिन नारियल से फूल कैसे निकल सकते हैं?

रोशन : आप लोग तो जानते ही हैं कि नारियल में तीन आँखें होती हैं। उसकी एक आँख में छेद करके पहले से मोगरे की कलियाँ डाल दी गई हैं जो अन्दर खिलकर फूल बन गई हैं।

इंस्पेक्टर : और पानी डालने से कागज कैसे जल गए?

रोशन : उन कागजों पर पोटैशियम परमैंगनेट का लेप चढ़ा था। जब उन पर पानी के बहाने ग्लिसरीन डाला तो दोनों में क्रिया हुई और आग जल पड़ी। ये सब विज्ञान के चमत्कार हैं। स्वामी महाराज इन्हें मंत्र का चमत्कार कहकर वाहवाही लूटनेवाले थे, पर मैंने सामान बदलकर इनकी पोल खोल दी।

इंस्पेक्टर : वाह रोशन! तुमने अपनी बुद्धि से लोगों को भ्रमित होने से बचा लिया! (स्वामी को संबोधित करके) अब चलो, स्वामी महाराज, मैं थाने में तुम्हें अपना चमत्कार दिखाता हूँ।

(सभी लोग जोर–से तालियाँ बजाते हैं और 'चमत्कार भई चमत्कार, विज्ञान के देखो चमत्कार। चिल्लाते हैं।)

(परदा गिरता है।)

शब्दार्थ

मजमा – भीड़ / व्यक्तियों का समूह
प्रदर्शन – दिखावा
अद्‌भुत – अनोखा
ढोंगी – ढोंग करनेवाला
भस्म – राख
आहिस्ता – धीरे–से
चमत्कार – असामान्य काम करके दिखाना
भयभीत होना – डर जाना

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1. स्वामी ने जतिन के पेट में दर्द होने का क्या कारण बताया?

प्रश्न 2. स्वामी ने किस ढोंगी प्रक्रिया से जतिन के पेट का दर्द दूर किया?

प्रश्न 3. राहुल ने स्वामी के ढोंग की पोल कैसे खोली?

प्रश्न 4. नारियल से फूल कैसे निकले?

प्रश्न 5. रोशन ने क्या–क्या चमत्कार दिखाए?

प्रश्न 6. भीड़ स्वामी जैसे लोगों के ढोंग से क्यों प्रभावित हो जाती है?

प्रश्न 7. बीमार पड़ने पर हमें किसी साधु के पास जाना चाहिए या डॉक्टर के पास? कारण सहित उत्तर लिखो।

भाषातत्व और व्याकरण

प्रश्न 1. नीचे लिखे मुहावरों के अर्थ लिखो और वाक्यों में प्रयोग करो।

पोल खोलना — वाहवाही लूटना

हैरान रह जाना — भस्म कर देना

खुसुर–फुसुर करना

प्रश्न 2. निम्नलिखित शब्दों में से मूल शब्द और उनके आगे या पीछे जुड़े शब्दांश अलग–अलग करके लिखो–

उपयोग, लूटनेवाला, रासायनिक, विज्ञान, प्रदर्शन।

प्रश्न 3. उचित विभक्ति चिह्न लगाकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करो–

क. स्वामी जी जतिन ..... एक ऊँची जगह लिटा देते हैं।

ख. स्वामी जी जतिन ..... कमीज उठाकर देखते हैं।

ग. स्वामी जी! पेट ..... दर्द हो रहा है।

घ. पेंसिल ..... लिखो।

ङ नाटक ..... सभी पात्रों ने अच्छा अभिनय किया।

- संबोधन के पश्चात् संबोधन चिह्न (!) लगाया जाता है, जैसे– स्वामी जी! मेरा पुत्र बीमार है।

  यह क्या स्वामी जी महाराज! (आश्चर्य)

  ओह! अनर्थ। (दुख)

- संबोधन के बहुवचन शब्दों में अनुनासिक का प्रयोग नहीं होता, केवल अंतिम अक्षर का 'ओ' से अंत हो जाता है। उदाहरण पढ़ो और समझो।

  लड़को! मैदान में खेलो।

  लड़कों! मैदान में खेलो।

  पहले वाक्य में प्रयुक्त 'लड़को'! शब्द शुद्ध है दूसरे वाक्य में 'लड़कों'! प्रयोग अशुद्ध है।

प्रश्न 4. नीचे लिखे वाक्यों के रिक्त स्थानों में बहुवचन शब्दों का प्रयोग करो–

क. ..... ने तालियाँ बजाईं। (दर्शक)

ख. ..... को देखकर आनंद आ गया। (बच्चा)

ग. ..... के द्वारा सफाई अभियान चलाया गया। (महिला)

घ. ..... की स्वामी से झड़प हुई। (युवक)

ङ. ..... ! कल विद्यालय मत आना। (बालक)

रचना

- इस एकांकी की कथा को अपने शब्दों में लिखो ।
- नीचे बने चित्रों को देखो और उसके आधार पर एक कहानी बनाकर लिखो।

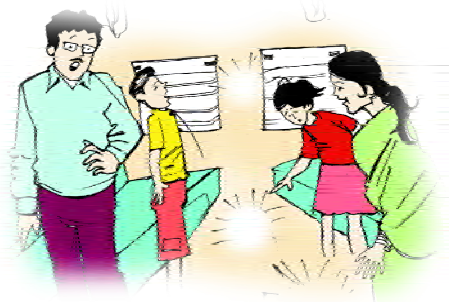

गतिविधि

- बाल–सभा में इस नाटक का मंचन करो।

योग्यता–विस्तार

सोचो और चर्चा करो–

- जादू दिखानेवाला या मदारी का खेल दिखानेवाला भीड़ को ताली बजाने के लिए क्यों कहता है?
- इसी तरह का कोई एकांकी बालपत्रिका से लेकर बालसभा में मंचन करो।